छाँव की खोज नहीं, इस क्षण को अपना बनायें

एक निराश व्यक्ति ने अपनी डायरी में लिखा : 'मेरे जैसा अभिशप्त मनुष्य कौन? जिसको मिलने जाता हूँ वो जैसे मेरी तरफ घूर-घूर कर देखता है! दुनिया से जैसे प्रसन्नता का सुख ही सूख गया है, मुझे लगता है कि जीवन जीने योग्य नहीं रहा। आने वाला कल उज्जवल होगा, इस अपेक्षा में ज़िंदगी का आधा समय बीत गया।' उस मनुष्य को चक्कर आया और बेहोश होकर गिर पड़ा। इतने में ही राजा की सवारी वहाँ से गुज़र रही थी। राजा ने कहा: 'उस व्यक्ति को साथ ले लो। 'उसे आश्वासन और सम्भाल की ज़रूरत है।'

थोड़ी देर बाद वो मनुष्य होश में आया। उसने देखा कि वो तो राजमहल में है! मन ही मन विचार किया कि राजा कितना भाग्यशाली है। इतने में राजा का अपने मंत्री के साथ के संवाद का शब्द उसके कान में सुनाई दिया। राजा कह रहा था: 'मुझे प्रसन्नता का रहस्य समझ में नहीं आता। जीवन का आधारभूत ज्ञान किसी के पास से मिलता नहीं।'

- ब्र.कु. गंगाधर

एक महान विचारक ने लिखा है : 1. जीवन में महत्व का समय कौन सा? 2. जीवन में करने लायक काम कौन सा? 3. महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन है, जिसके साथ से जीवन में सफलता मिले?

राजा की इच्छा का सम्मान करते हुए मंत्री ने चर्चा सभा, गोष्ठियां, सतसंग आदि का आयोजन कर संत महात्माओं और विद्वानों के समक्ष राजा के उन तीनों प्रश्नों को रखा। लेकिन उन प्रश्नों के बारे में सबका भिन्न-भिन्न मतमतांतर दिखाई देता रहा। किसी ने सुबह जल्दी उठने के समय को महत्वपूर्ण माना। किसी ने दिन के तीन घंटे महत्वपूर्ण बताये। राजा को समझ में नहीं आया, वह उलझ गया। उन महात्माओं और विद्वानों के स्पष्टीकरण से उसे संतोष न हुआ। कई लोग बचपन को स्वर्णकाल मानते थे तो कई यौवन और वृद्धावस्था को।

जीवन में करने लायक कर्म के संदर्भ में भी उत्तर देने वालों में मतभेद दिखाई पड़ता था। कोई ज्ञान मार्ग की प्राप्ति को उत्तम कार्य समझते थे, तो कोई भक्ति को, तो कोई फिर जन सेवा को उत्तम मानते थे। कोई प्रशासन तथा सत्ता को। जीवन में महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन, उसके बारे में भी संतोषजनक उत्तर नहीं मिला। राजा को दु:खी देख मंत्री ने कहा: 'यहाँ से दस कोस दूर एक सज्जन रहता है। खेती-बाड़ी कर अपने परिवार के साथ आनंदपूर्वक जीवन जीता है। उनके पास आपके प्रश्नों का उत्तर मिल जायेगा।' राजा की सहमति मिलने पर मंत्री ने उस व्यक्ति का पता ढूंढ़ निकाला और राजा की ओर से पधारने का निमंत्रण दिया।

किसान ने कहा: 'मुझे मान-सम्मान नहीं चाहिए। उसे मिलना है तो अभिमान को छोड़कर अकेले मुझसे मिलने आये।' राजा और मंत्री उसकी बात सुनकर प्रभावित हुए और उस सज्जन से मिलने के लिए गए। उसने राजा को आदरपूर्वक बिठाया और कहा: 'लीजिए, यह मिट्टी खोदने का सामान और थोड़ा श्रम कीजिए; जिससे मुझे आराम मिलेगा।'

राजा मिट्टी खोदने में लगे रहे। इतने में एक युवक हाथ में एक खंजर लेकर वहाँ पहुँच गया, वो घायल भी था। वह सज्जन उसे अपनी झोपड़ी में ले गया। सज्जन ने पूछा कि तू खंजर लेकर किसको मारना चाहता है? इस राजा को। उसने मेरे पिता को राजद्रोह का गुनहगार घोषित कर छलकपट के द्वारा मरवा दिया। मेरे पिता ने मुझे कहा था कि आप बड़े होकर मेरी मौत का बदला लेना। सज्जन ने युवक को दूध पिलाकर शांत किया। राजा ने भी उस युवक को क्षमादान दिया।

राजा के प्रश्नों की चर्चा करने से पहले सज्जन ने कहा : 'हे राजन! वर्तमान का प्रत्येक क्षण महत्वपूर्ण है और वर्तमान में आपके पास आया व्यक्ति महत्वपूर्ण है। इसीलिए याद रखना कि जीवन एक बहती धारा है। जीवन में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। वर्तमान हर पल बदलता है। इसलिए वर्तमान में जीना और होशपूर्वक जीना। होश रहेगा तो अपने आप कार्य कैसे करना है उसका जवाब मिल जायेगा। होशपूर्वक जीयेंगे तो आपके हरेक प्रश्नों का समाधान हो जायेगा। जीवन में कार्यों को साक्षी भाव से जियो और आनंदित रहो।' राजा जिन प्रश्नों का उत्तर चाहता था वो उसे मिल गया।

- शेष पेज 4 पर

राजयोगियों के लिए बहुत ज़रुरी - स्वदर्शनचक्र

जो ईश्वर के बच्चे परमानन्द में रहने के इच्छुक हैं उन्हें यही धुन लगी रहती है कि एक ही बाबा को याद करते अपना जीवन धन्य बना लें। हम राजयोगी बेहद के सन्यासी अपने आपको देखें कि हमारा भविष्य क्या है? विनाश काल है, हमें प्रीत बुद्धि रहना है। मनमनाभव भी रहना है और स्वदर्शन चक्र भी फिराना है। पहले मनमनाभव रहें या स्वदर्शन चक्र फिरायें? मनमनाभव माना एकाग्रचित्त होकर एक बाबा को याद करना है।

जब एक बाबा की याद में रहते हैं तो स्वदर्शन चक्र फिराना आसान होता है। स्वदर्शन चक्र फिराते हैं तो 'नथिंग न्यू' लगता है। यह विघ्नों को विनाश करने का, अपनी स्थिति को अचल-अडोल बनाने का अच्छा साधन है। नथिंग न्यू हमको कम बोलने की ट्रेनिंग देता है। इससे हमारा टेम्पर हाई नहीं होगा, नाराज़ नहीं होंगे, गुस्सा भी नहीं होंगे। यह पाठ स्वदर्शन चक्र फिराने में मदद करता है। स्वदर्शन चक्र फिराने से जानते हैं - जो हुआ, अच्छा हुआ, जो होगा अच्छा होगा। क्यों, क्या का क्वेश्चन नहीं उठता। 'क्यों' उठाते तो उसका उत्तर नहीं है। जो ड्रामा में हुआ सो ठीक हुआ। ड्रामा की नॉलेज ने हमको निश्चिंत रहना और निश्चित भावी पर अटल रहना सिखाया है। अगर क्वेश्चन को समाप्त करना है, गुलाब का फूल बनना है तो कांटो में रहते हमें न्यारा-प्यारा रहना है। सुगन्ध फैलानी है, अच्छाई धारण करनी है, मोती चुगना है, दूध और पानी को अलग कर देना है। मिक्स करना बड़ी बात नहीं है। लोभ वश, मोह वश मिक्स कर लेते हैं। परन्तु हंस में इतनी शक्ति होती है, जो अपने काम की चीज़ ले लेता है, काम की नहीं है तो छोड़ देता है। ऐसे जब तक हम हंस मिसल नहीं बने हैं, तब तक परखने वा निर्णय करने की शक्ति नहीं आ सकती। स्वदर्शन चक्र फिराना हम राजयोगियों के लिए बहुत ज़रूरी है। हंस वही बनेगा जिसका ज्ञान खज़ाने से प्यार होगा। ज्ञान हमको अमृत जैसा मीठा लगता है। जितना अमृत पियेंगे शीतल बनते जायेंगे। ज्ञान की वैल्यु का पता चलता जाएगा। ज्ञान हमें कौड़ी से बदलकर हीरे जैसा बनाता है। बाबा ने हम सबके सिर पर ज्ञान का कलश रखा है। तो हम अमृत पियें और पिलायें। ऐसे हम रॉयल योगी-राजयोगी हैं। हमारे अन्दर कितनी खुशी है जो हम परमात्मा को अपना मात-पिता, सखा-स्वामी समझते हैं। साथ-साथ हम अमृत पीकर पावन बनते और पावन बनाने की सेवा भी करते हैं।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हमारी सब मनोकामनाएं पूरी की हैं। अभी हम जगदम्बा माँ के साथ-साथ कल्प वृक्ष के नीचे बैठ तपस्या कर रहे हैं। तो सबकी मनोकामनायें पूरी करनी हैं। लेकिन सर्व की मनोकामनायें पूर्ण करने के लिए बुद्धि बेहद की चाहिए। जैसा बाप, वैसे बच्चे तो यह भी खुशी की बात है।

मेरे-मेरे को छोड़, एक मेरा बाबा कहो

सभी के चेहरे खुश, हर्षित रूप में दिखाई देते हैं, क्योंकि हमें कौन मिला है, उसकी महिमा का एक शब्द भी याद है कि बाबा हमारा क्या है? दुनिया वाले बिचारे गाते रहते हैं, कीर्तन करते हैं, भजन गाते हैं, पुकारते हैं, लेकिन हम क्या कहेंगे? हम कहेंगे कि जो पाना था वो पा लिया। पा लिया कि अभी पाना है? पा लिया। तो मेरा बाबा है, 'मेरे' शब्द को अण्डरलाइन करो, क्योंकि हमने भी 63 जन्म भक्ति की और पुकारा भी बहुत कि आओ, और बाबा भी ड्रामा अनुसार अब आया है मेरे लिये। बाबा मेरा है, मेरे लिये ही आया है, इसमें बहुत रुहानी नशा चढ़ता है।

मेरा शब्द कहने से अपना अधिकार याद आ जाता है। जिस पर जिसका अधिकार होता है, वही कह सकता है यह मेरी है या मेरा है, इसलिये बाबा कहते सिर्फ बाबा शब्द नहीं बोलो। बाबा भगवान है, बाबा बहुत बड़ा है, बाबा परमधाम में रहता है... वो तो ठीक है, लेकिन मेरा बाबा है, यह है मुख्य बात। भगवान के ऊपर हम अधिकार रख सकते हैं, क्योंकि भगवान ने हमको जन्मसिद्ध अधिकार दिया है। हमने कहा मेरा बाबा और बाबा ने भी कहा कि मेरे बच्चे, तो अधिकार हो गया ना, हमारा बाबा पर और बाबा का अधिकार हमारे ऊपर। तो मेरा बाबा यह भी याद रखो तो सारे दिन में जो 63 जन्म से हद के मेरे-मेरे का कॉन्शियस रहा है, वो सब खत्म होता जायेगा। जैसे मेरा शरीर, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरे-मेरे-मेरे... तो यह मेरे-मेरे का ही फेरा है, लेकिन बाबा भी कितना चतुर है। बाबा कहते हैं तुमको मेरा-मेरा कहने की आदत है, तो मेरा ही कहो। मेरा बाबा कहेंगे तो इसमें मेरा शब्द तो आ गया ना। उस मेरे में अनेक मेरे हैं। शरीर मेरा है तो शरीर में कितनी कर्मेन्द्रियाँ हैं, मेरा हाथ, मेरा पांव, मेरी आँख, मेरे कान... देखो कितना मेरा-मेरा है! परिवार में भी कितने मेरे हैं!

दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

अगर एक परदादा, ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर कोई हो और वो अपना सारा परिवार देखे, कितनी लम्बी लिस्ट होगी! कितना मेरा-मेरा होगा! तो मेरे-मेरे ने ही हमको बॉडी कॉन्शियसनेस में लाया है। अब उसी कॉन्शियसनेस को बदलकर मेरा-मेरा कहने का बहुत अभ्यास करना है। जैसे पहले मैं आत्मिक स्थिति में स्थित हूँ, क्योंकि पहला पाठ हमारा यह है - मैं आत्मा हूँ। अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करना होता है, तो देखो मैं स्वयं को आत्मा समझ बाप को याद कर रहा हूँ? बॉडी कॉन्शियसनेस में रह सिर्फ बाबा... बाबा सोचने, कहने से कुछ नहीं होता है, क्योंकि यह बाबा तो बॉडी कॉन्शियसनेस का है ही नहीं। तो अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो, यह लाइन बाबा की अण्डरलाइन करके अच्छी तरह से बहुतकाल तक अभ्यास करो।

ब्राह्मण वो, जिसकी उपराम वृत्ति हो

ब्राह्मण आहार, विहार, विचार में पवित्र हैं। आहार-खाना, विहार-रहन सहन और विचार-संकल्प शक्ति। हम दुनिया वालों की तरह फैशन नहीं कर सकते। जब ब्राह्मण बनते हैं तो अच्छा ही नहीं लगता। खराब लगेगा। बाबा के पास आते ही खाना शुद्ध, पहनना शुद्ध, विचार शुद्ध शुरू हुआ माना ब्राह्मण बने।

हमारी कम्पनी भी ऐसी हो जिसमें आत्मिक उन्नति हो। बोल-चाल शुद्ध हो। ब्रह्मण माना पक्का। ब्राह्मण माना कथा करने वाले। यही लगन हो जो सबकी परमात्मा से सगाई हो जाये, सबको रास्ता दिखायें। पण्डे का काम है मंज़िल पर ले जाना। सिर्फ कथा सुनाकर पूरी नहीं करना। सबके प्रति कल्याण भावना रखना, इसलिए ब्राह्मण सेवाधारी माने जाते हैं। देवताओं का केवल पूजन है लेकिन कोई भी कार्य अर्थ जन्म से लेकर मरने तक हर कार्य में ब्राह्मण को सामने रखते हैं। ब्राह्मण वो, जिसमें गृहस्थी संस्कार न हो, चिन्ता फिक्र करने के संस्कार न हों। उपराम वृत्ति हो। क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र उपराम नहीं रह सकते। शूद्र माना गंदगी से प्यार, वैश्य माना चिन्ता। क्षत्रिय माना विश्वास की कमी या विश्वास करने की मेहनत करने वाला। हम सभी तपस्या ऐसी करें जो कोई भी लगाव खत्म हो जाये। उपराम वृत्ति ऊपर खींचती है। लगाव नीचे उतारता है। एक महाजाल में फंसाता है। पिंजरे का पंछी बना देता है। उड़ना चाहता है लेकिन उड़ नहीं सकता। पंछी डाली को पकड़ कर बैठा है और कहता है मैं कैसे उड़ूं। एक है पिंजरे का पंछी जिसने जान बूझकर अपने को पिंजरे में फंसाया है, दूसरा है जो डाल को पकड़कर बैठा है। इसलिए नष्टोमोहा और अनासक्त। पदार्थों में अनासक्त, सम्बन्धों में कोई अटैचमेन्ट नहीं। फिर देखो कितनी सुन्दर तपस्या होती है।

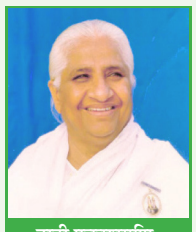
दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

शंकर के सामने शिव दिखाते हैं। इसलिए भक्तिमार्ग में शंकर शिव को एक साथ दिखा दिया है। अशरीरी भव की स्थिति संपूर्णता ले आएगी। त्रिमूर्ति में विष्णु को खड़ा हुआ क्यों दिखाते हैं? ब्रह्मा और शंकर बैठे हुए हैं। झाड़ के नीचे मम्मा, बाबा और बच्चे बैठे हुए हैं। त्रिमूर्ति में संपूर्ण ब्रह्मा और शंकर बैठे हैं। अशरीरी बनना है तो संपूर्ण भी बनना है, तो विष्णु सामने है। गदा भी हाथ में है, ज्ञान की पराकाष्ठा है। कोई भी बात आई उसका हल है। राजाओं के हाथ में गदा दिखाते हैं। राजाई मिलती है गदा से। शंख ध्वनी ऐसी हो, जो हर आत्मा कहां भी हो, आकाशवाणी की तरह उस तक पहुंचे। कमल पुष्प समान न्यारे रहो। जितना अशरीरी होंगे, उतनी संपूर्णता और ये चार अलंकार अनुभव होते रहेंगे।